कक्षा–छठी विषय–हिंदी प्रकरण–संवाद,चित्र–वर्णन, अनुच्छेद
दिवस– 16, 17, 18

संवाद लेखन

दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच किसी विषय को लेकर चल रही बातचीत को संवाद कहते हैं। संवाद का अभिप्राय बातचीत से है। वक्ता और श्रोता के बीच हो रही बातचीत को संवाद कहते हैं। नाटक, एकांकी, प्रहसन और फ़िल्म आदि में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इन विधाओं में चरित्र अपने संवाद स्वतः बोलते हैं। इन्हीं के माध्यम से घटनाक्रम आगे चलता है इसलिए रचनात्मक–लेखन में संवाद–लेखन का महत्वपूर्ण स्थान है।

संवाद–लेखन के समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

- संवाद छोटे और पात्रानुकूल होने चाहिए।
- संवाद सरल एवं रोचक शैली में लिखे जाने चाहिए।
- संवाद आवश्यकता के अनुरूप उचित क्रम में लिखे जाने चाहिए।
- दो व्यक्तियों के संवाद में परस्पर क्रमबद्धता होनी चाहिए।
- संवाद का प्रत्येक वाक्य विषय से जुड़ा होना चाहिए।
- संवाद की भाषा स्पष्ट होनी चाहिए।

उदाहरण– कॉलोनी में चोरी की बढ़ती घटनाओं के संबंध में दो महिलाओ के बीच संवाद लिखिए–

अर्चना– मीता बहन! आजकल तुम दिखाई ही नहीं देती, बिल्कुल ईद का चाँद हो गई हो।

मीता– ऐसी कोई बात नहीं, बहन। दरअसल मैं एक महीने के लिए मेरठ गई हुई थी।

अर्चना– परिवार में सभी ठीक तो हैं ना?

मीता– हाँ! सभी स्वस्थ एवं सकुशल हैं। आप बताइए आप कैसी हैं?

अर्चना– मैं तो ठीक हूँ, पर आजकल हमारी कॉलोनी में चोरी की घटनाएँ बहुत बढ़ गई हैं। मैं तो इस चिंता में घर छोड़कर कहीं नहीं जाती।

मीता– सुना तो मैंने भी है कि यहाँ कई घरों में चोरी हो गई है। क्या किसी ने पुलिस में शिकायत दर्ज़ नहीं कराई?

अर्चना– पुलिस तो आई थी, पर अभी तक कोई चोर पकड़ा नहीं गया।

मीता– दरअसल, हमें खुद भी सावधान रहने की ज़रूरत है। चोर हमारी लापरवाही का ही फ़ायदा उठा लेते हैं।

अर्चना– सच कहती हो , हमें ज़रा–सी भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। श्रीमती शर्मा दस

मिनट के लिए सब्ज़ी लेने गई थी, लेकिन घर का ताला लगाना भूल गई। इसी दौरान उनके घर चोरी गई।

मीता– बहन! हमें वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के पास जाकर कॉलोनी में एक पुलिस चौकी बनवाने की दरख़्वास्त देनी चाहिए।

अर्चना– तुम ठीक कहती हो। हम आज ही कॉलोनी के प्रधान से मिलकर उन्हें यह सुझाव देंगे।

मीता– ठीक है, बहन। हम सब एक घंटे बाद प्रधान जी के घर पर मिलते हैं।

प्रश्न–परीक्षा की तैयारी के संबंध में दो सहपाठियों के मध्य अधूरा संवाद पूरा कीजिए–

मोहित – अरे अनिल! परीक्षाएँ तो पास आ गई हैं, तुम्हारी तैयारी कैसी चल रही है?

अनिल – मैंने तो गणित के सारे सवाल हल कर लिए हैं, लेकिन हिंदी और सामाजिक अध्ययन की तैयारी अभी अधूरी है। तुम्हारी तैयारी कैसी चल रही है?

मोहित – मेरी तैयारी तो सामान्य गति से ही चल रही है। मुझे गणित से डर लग रहा है।

अनिल – गणित नियमित अभ्यास का विषय है, इसका प्रतिदिन अभ्यास करने से सारे सवाल हल हो जाते हैं।

मोहित –.....

.....।

अनिल –.....

.....

.....।

मोहित –.....

.....।

अभ्यास कार्य

प्रश्न– दिए गए प्रश्नों में से किन्हीं चार विषयों पर 80 से 100 शब्दों में संवाद लिखिए।

क. नई साइकिल खरीदने के संबंध में पिता–पुत्र के मध्य संवाद लिखिए।

ख. कक्षा में विलंब से आने पर छात्रा और अध्यापिका के मध्य संवाद लिखिए।

ग. प्रातःकाल की सैर के विषय में दो पुराने मित्रों के बीच संवाद लिखिए।

घ. कक्षा में भूल की क्षमा माँगते हुए छात्र और अध्यापक के मध्य संवाद लिखिए।

ड. जन्मदिन की पार्टी में बिताए गए यादगार समय के बारे में दो मित्रों के मध्य चल रही बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

च. रिक्शा–चालक और एक महिला के मध्य रिक्शा के भाड़े के बारे में चल रही बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तर–.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

दिवस– 17	चित्र–वर्णन	विषय–हिंदी

चित्र–वर्णन

'चित्र–वर्णन' एक ऐसी कला है जिसमें मन के भाव प्रकट होते हैं। चित्र में दिखाई दे रहे दृश्यों और घटनाओं को जब अपने शब्दों में उतारते हैं तो वह चित्र–वर्णन कहलाता है। चित्र हमारी कल्पनाशक्ति पर प्रतिबिंबित होकर मानस पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

ध्यान में रखने योग्य बातें–

- ❖ सबसे पहले चित्र का शीर्षक तय करें।
- ❖ निर्धारित शब्द–सीमा से अधिक न लिखें।
- ❖ वाक्य छोटे एवं विषयानुकूल हों।
- ❖ चित्र को सूक्ष्मता से देखें, दिखाई देने वाले लोगों के चेहरे के भावों तथा अन्य क्रियाओं का चित्र के साथ संबंध समझने का प्रयास करें।

चित्र–वर्णन

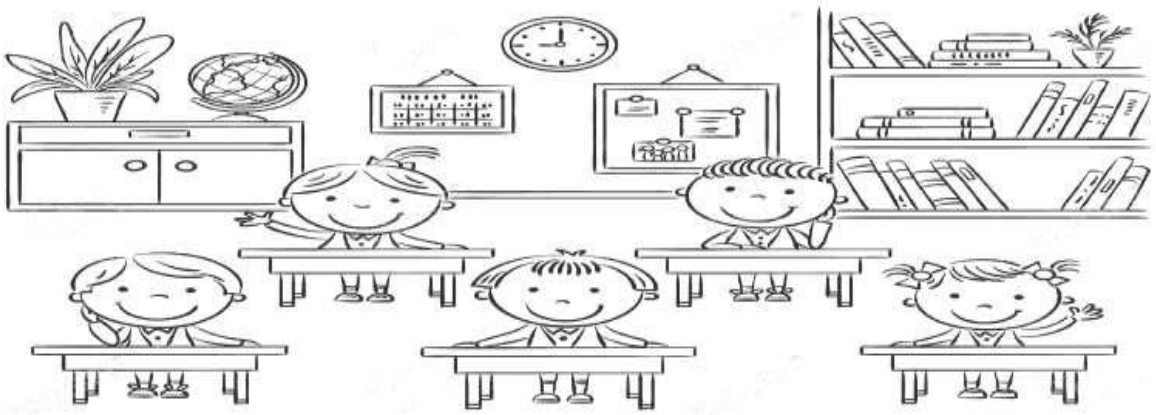

प्रस्तुत चित्र में एक कक्षा का दृश्य है। बच्चे अपने–अपने स्थान पर बैठे हुए हैं। पीछे की ओर पुस्तकें रखने की शेल्फ़ बनी हुई है। शेल्फ़ में किताबों के साथ–साथ एक छोटा फूलदान भी रखा हुआ है। दीवार पर एक घड़ी लगी हुई है। कक्षा में सामान रखने का बॉक्स रखा हुआ है। उस शेल्फ़ पर एक ग्लोब रखा हुआ है। कक्षा में कुल पाँच बच्चे हैं। दीवार पर एक चार्ट टँगा हुआ है। उस दीवार पर एक कलैंडर भी लगा हुआ है। सभी बच्चे खुश हैं।

अभ्यास कार्य

प्रश्न– दिए गए चित्र का अवलोकन कर 40 से 50 शब्दों में वर्णन कीजिए तथा एक उचित शीर्षक भी दीजिए।

उत्तर–.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

दिवस– 18	अनुच्छेद लेखन	विषय–हिंदी

अनुच्छेद–लेखन

किसी विषय पर इस तरह लिखना कि विषय सार रूप में प्रस्तुत हो जाए, अनुच्छेद–लेखन कहलाता है। यह निबंध का छोटा रूप होता है। अनुच्छेद में बहुत संक्षेप में एक विषय के मुख्य बिंदुओं पर चर्चा होती है। अनुच्छेद का विषय कोई घटना, अनुभव, सूक्ति अथवा कथन, कुछ भी हो सकता है।

अनुच्छेद लिखने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है–

- ❖ सबसे पहले अपने विचारों को क्रम दें।
- ❖ वाक्य छोटे–छोटे तथा विषय के अनुकूल हों।
- ❖ वाक्य आपस में संबंध रखते हों।
- ❖ भाषा सरल तथा सटीक होनी चाहिए।
- ❖ एक ही बात को बार–बार न दोहराएँ।
- ❖ किसी सूक्ति या कथन का प्रयोग कर सकें, तो अच्छा है।
- ❖ अनुच्छेद संक्षिप्त एवं प्रभावशाली हो।

अनुच्छेद–
पुस्तकालय

'पुस्तकालय' अर्थात् 'पुस्तकों का घर'। पुस्तकालय में ज्ञान का भंडार होता है। मेरे विद्यालय में भी एक पुस्तकालय है। इसमें सैकड़ों पुस्तकें हैं। सभी विद्यार्थियों को वहाँ जाना बहुत अच्छा लगता है। मैं भी इस प्रतीक्षा में रहता हूँ कि कब पुस्तकालय में जाकर पुस्तकें पढ़ सकूँ। पुस्तकालय में अनेक विषयों की पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ होती हैं, जो हमारा ज्ञान बढ़ाती हैं; जैसे–विज्ञान, सामान्य विज्ञान, हिंदी, साहित्य आदि। मुझे कहानियों की पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। पुस्तकालय के कुछ नियम होते हैं। हमें उनका पालन करना चाहिए। वहाँ बातचीत करने की बजाय चुपचाप बैठकर पढ़ना चाहिए। पुस्तकालय से ली गई पुस्तकों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए और न ही उनपर कुछ लिखना चाहिए। पुस्तकालय सभी के लिए होता है। अतः हमें सभी की सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। मैं अपने विद्यालय के पुस्तकालय के नियमों का पालन करता हूँ तथा जब भी अवसर मिलता है, वहाँ जाकर पुस्तकें पढ़ता हूँ, जिससे मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही ज्ञान में भी वृद्धि होती है।

अभ्यास कार्य

प्रश्न–निम्नलिखित में से किन्हीं तीन विषयों पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए –

1. वृक्ष : हमारे जीवन का आधार
2. मेरी पहली रेल यात्रा
3. प्रातःकाल की सैर
4. मेरे सपनों का भारत
5. मेरे जीवन का लक्ष्य
6. दीपावली

उत्तर–.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....